



# धर-खसौनी अटपट्टीके जुआनसब मारत हुत्था राजर्षि जनक विश्वविधालय आब बनिएक' रहत- विमलेन्द्र निधि



कतेको बरखक सरकारी अटपट्टी आ किछु लोकक टड्घिचा प्रवृत्तिके चलते राजर्षि जनक विश्वविद्यालयक गठनक बात, सुप मेहक भन्दा जकाँ एम्हरस' ओम्हर जे अनेरे ओडघराइत छलै, से देखिक' शनिदिन श्रीरामानन्द युवा क्लवक आयोजनामे एकटा

भूमटगर सडोरिया बैसार बैसल छल । एहि विश्वविद्यालयके गठनके पिड़ा मत्थन सम्बन्धमे सब पक्षस' नीक-नीक बातसब उठल आ एकरा पक्षमे, जनदबाव सृजना करबाक हिसाबे आगू दिनक कार्यक्रम सब सेहो बनल ।

श्रीरामानन्द क्लवक अध्यक्ष नवीन कृ.मिश्रक अध्यक्षतामे, विश्वविद्यालय गठन प्रकृया वास्ते दबावमूलक सहयोग देबाक हेतुए जे बैसार बैठल छल, ओहिमे श्याम शशि एकर अटकल मुद्दा आ विसुकल गतिके सम्बन्धमे बिकल्लाक', अपन बात

रखैत कहने रहथि- एहि प्रति सरकारके नेत आ मन दुनू साफ सोझ नइ अइ । नइ त' ई देखले दिनमे ई संचालनो भ' गेल रहितैक ।

क्लवक पूर्व अध्यापक जीवनानथ चौधरी, जे जिविस.स' सेहो सम्बद्ध छथि, कहलनि- एकर मूल उत्थान बास्तविक अर्थमे जिल्ला विकासस' भेल छै आ एहिमे जिल्ला विकासक सड धनुषा जिल्लाक प्रत्येक गाविस एकरा समर्थन करैत एक/एक हजारक' नगदो जम्मा कएने छलै आ एखन धरिक सबहे जमौक रुपैया

बाँकी पृष्ठ अन्तिममे

## राजनैतिक भागवण्डा महाभ्रष्टाचार जे करितए साडि, एत' तकरे चलैछै, सरकार

एखन राजनीतिक सबटा चालि, बात उवानि पड़ने, देशे भमतरा क' अराजक आ मूल्यहीन बाटक धस धएने चलल जा' रहल बुझाइछ । संवैधानिक पद आ उच्च स्तरक निकायसबमे राजनैतिक नियुक्ति, भागवण्डाक हिसाबे भेने, एहिमे दलगत हिस्सेदारी आ भ्रष्टाचारीक चलते, बहुत बात नन्ह-भन्ड आ भद्रगोल भ' गेल अछि ।

विश्वविद्यालय आ क्याम्पसक पद आ पदाधिकारी नियुक्तिमे अमर्यादित आ अप्राज्ञिक दलगत हिस्सेदारीक फटौजीस' सौंसे शिक्षा-क्षेत्र अस्त-व्यस्त त' भेले अछि, शिक्षाक स्तर आ सम्पूर्ण शिक्षाप्रणाली निछाक' निरर्थक भ' गेल बात, ककरोस' चोराएल-नुकाएल नइ अइ । होइत-हवाइत आब क्याम्पस सबमे पढ़ाइ-लिखाइ नौधरीए सनके चलल बुझएने, विश्वसनीयता आ गुणस्तरके अहेरमे, स्कूली विद्यार्थी बोर्डिङ स्कूलमे आ उच्च स्तरक पढ़ाइकेलेल त्रिवि क्याम्पस दिसि भाँखियो नइ मारिक', महग प्लस-टूमे ढङलरल धरोहिया लागि जाइए । सरकारी पढ़ाइ अनेर गाइ सनके लगने, एकर नियन्त्रण आ निर्देशन गम्भीरतापूर्वक ककरो नइ रहने, अओर अराजक आ अस्तव्यस्त देखाइ द' रहल बातक उलहन उपराग नागरिक-समाज भरस' सुनाइ दइए रहल अछि । सम्बन्धित क्षेत्र एकरा एम्हरे-ओम्हरेके बात बूझिक' भलेहि मठेर दौक, मुदा दलसबमे

जनप्रतिवद्धताक भावना अलोपित भने देशक स्थिति भयावह बनि गेल अछि, कहनिहारक मुँहमे भिंक देनिहार आरुढ़ अमन्त्र केओ नइ बुझाइछ ।

धसल व्यवस्था आ लेभराएल बात खाली शैक्षिक क्षेत्रमे अछि से नहि, आनोआन क्षेत्रमे सेहो एहन किरदानी अनेरे देख'मे आबि रहल अछि । आइ योग्यता आ दक्षता घोंडौक घास छिल्लैए आ चाकरीबाजी, भ्रष्टाचारी तथा घूस द'क' पद पएनिहारसब, अनेर घोंडी फौद खेलाइए ।

देश ककरो बपौती नइ अइ जे एकरा हिस्सेदारी भाग-वण्डा करत । अन्तरिम कालके नाहकमे दुरुपयोगक'क', दलगत स्वार्थ आ कार्यकर्ताके पोसनाइए कुप्रवृत्तिस' देश धसल आ गलल चलि जा रहल अछि । एखनुक आवश्यकता नव निर्माण आ संरचना विकासक अछि आ एहिमे योग्यता, दक्षता आ सृजनात्मक सकारात्मक सौचक प्रभुत्वक अछि । देशके जँ खूब समृद्ध, बहुत विकसित आ सब अर्थ गतिशील बनएबाक अछि त' एहिलेल छुद्र स्वार्थ आ पलिताह राजनीतिक नियुक्तिस' बहुत उपर उठि, पारदर्शी आ विश्वसनीय उच्च मापदण्डके आधारपर नियुक्ति हुअइके चाही । सेहे जँ नइ भेल त'- सघीय कथी के ? लोकतान्त्रिक केहन ? आ गणतन्त्र एहने ? जनआन्दोलनी भावनाक रुपान्तरण, नव नेपालक संरचनागत विकास आ भावी पुस्ताक समुन्नतिक लेल गम्भीरतापूर्वक एखनहि स' सबके सोच' पड़त ।

### समाचार विश्लेषण

## मैथिली कला-संस्कृति छानल लगहरि गाइ ?

मैथिली कला असलमे लोककला अछि आ लोक-समाजमे अनमन छानल लगहरि गाइसनके काहि काटि रहल सेहो देखल जा' रहल अछि । एहि दुरावस्थाप्रति आबहु सचेष्ट होएबाक बेरा-मौका इएह अछि । एकरा विडम्बने कहबाक चाही जे मैथिलीक महान, अलौकिक लोकगाथाके नटुआ नाचमे, सट्टा, आ कम्पनीके साइमे नष्ट-भ्रष्ट क' देल गेल अछि । परापूर्व कालमे गाथा-शप्तशती सेहो रहै आ भाषागत फटौजीमे हेरा-विलाक' बहुत थोड़ बँचल जे अइ, ओहिमे मैथिली लोकगाथाके अपन मौलिक पहचान आ पहुँच रहल अछि । मैथिलीक महान, उद्दाम आ परम मिथकीय चरित्र आ एकर गाथा, आधुनिक कोनहुँ महाकाव्यस' बीस अइ, उन्नैस नइ । एकर जीवन्तता एकरा लोक-जीवनक लग ल' जाक', अप्पन बना देने अछि ।



मैथिली लोकगीत सब अर्थे अपूर्व, अन्नत, अनगिनत अछि आ ई अनेको अभिप्राय तथा भाव-संवेगक अछि । जीवन-जगतक, लोक राग-रंगक, मानवक

बाँकि ५ पृष्ठ पर

The Best Hotel of Janakpur

आरामदायी आवासका लागि,  
सर्वोत्तम भोजन, नास्ताको लागि,  
स्वच्छ र शान्तिपूर्ण व्यवस्था लागी,  
**होटल सीता पैलेस**  
रामानन्द चौक जनकपुरधाम  
फोन नं.-०८१ ५२७६२६, ०८१ ५२७६२७

### अन्तरवार्ता

## त्रि.वि.के माइल फटने राजर्षिमे अटपट्टी लागल छल-विमलेन्द्र निधि

राजर्षि जनक विश्वविद्यालयक आवश्यकताके अपने केना परिभाषित करबै ?

आबके लोक छुच्छे विकास निर्माण नइ, संरचनागत विकास आ परिवर्तन सहितक नव-निर्माण चाहैछै । ओहूमे लगले एकर रुपान्तरण भेल देख' चाहै छै, आ से शिक्षाके क्षेत्रमे । ऐ ठाम त्रिवि त' छै, मुदा ओ युगक मांग अनुसारक उच्च शिक्षाक विकल्प नइ द' रहल छै । अइ लोकके खेत-पथार बेँचिक', घर-घरारी बन्हकी ध'क', वा कर्जा-वर्जा ल'क' देश विदेशमे पढ़' नइ जाय परीक, तकरे अपन मन माफिकक व्यवस्थाक वास्ते, ई विश्वविद्यालय प्रयोजनीय अछि ।

लोक कहैछै जे राराबमे पढ़ाइ-लिखाइ बहुत लौत-लपच छै । एहनमे प्रमाणपत्र बाँटि, बेरोजगारी उत्पादन कर'बला विवि. त' ने बनतै ?

नइ, एकर बन'के पाछू सबस' बढ्का मनोविज्ञान इएह छै जे जहियास' रा.रा.व.के निरीक्षण, निर्देशन आ अविभावकत्व अप्पन लोक, माने मकेश्वर बाबू, रामचन्द्र साहू, मेघबाबू, निधिजी सन-सनके रहनि त' ई गनगनाइत चल'बला, नमूनाके आदर्श क्याम्पस रहैक ! आ जहियास' ई त्रि.वि.के हाथ-बाटमे गेलै आ एकर सबटा देख-रेख काठमाण्डूस' हुअ' लगलै, त' ई अपट्टी खेतमे पड़ि गेलै ।



ओतक्का लोक एकर वास्तविक संरक्षण, सुपरिचालन आ सुव्यवस्थापन नइ कएलकै, नइ क' सकलै । कारण एकरा प्रति ओकर ममत्वस' बेसी शैक्षिक प्रशासनटा छलै । ईसब बात जाबत एहि ठामक अप्पन लोकक हाथमे नइ जएतै, ताबत धरि ई सपरिए सुधेर नइ सकैए ।

ऐ पुनितो काजमे बड़ बाधा-विरोधसब आएल, से कोम्हर-कतस' आएल ?

सबस' पहिने एकर तीव्र विरोध क्याम्पसक सब भरस' आएल । ओसब अपन सेवा-सुरक्षाके बात ल'क' जीउ-जानस' एकर विरोधमे अएलाह ।

बाँकि ३ पृष्ठ पर



प्रकाशक : **कुमार भास्कर**

सम्पादक : **प्रा. परमेश्वर कापड़ि**

सहसम्पादक **कैलास दास**

कार्यालय : जनकपुरधाम-१६, पुलचौक

फोन नं.: ०४१-५२४९५२

मो.नं. : ९८४४०२२५९४,

: ९८४४०५३९७३

: ९८४४१००१६४

ईमेल : **dhuadhaja@yahoo.com**

मुद्रक: **त्रिदेव अफसेट प्रेस**

जनकपुरधाम, फोन नं.: ०४१-५२२५९०



## सम्पादकीय

### वातावरण निर्माणक अनिवार्यता

मन, चित् आ प्रवृतिपर वातावरणक जीवन आ जगत्पर प्रभाव खूब नीक जकाँ आ गहीँरस' पड़ेछ। ई वातावरण सामाजिक सांस्कृतिक दुनू भ' सकैछ। पारिवारिक वातावरणक इकाइ लघु आ वैयक्तिक भेनहुँ अनिवार्य एहि दुआरे रहैछ जे एहिस' संस्कार आ व्यक्तित्वक निर्माण होइछ। ई एहन भावनात्मक आ संवेगात्मक आ आत्मिक होइछ, आ एकर छाप स्पष्ट आ दूरगामी रहैछ। नेपालक एखनुक सबटा ऐपक्रम आ प्रतिवद्धता सृजनात्मक रहने, एकर विकास( निर्माण आ समुन्नतिक सन्दर्भमे सबके ध्यान गम्भीरतापूर्वक जयबाक चाही।

राजनीतिक भसेठ आ जीवन(संघर्षक स्थिति(परिस्थितिस' उत्पन्न वातावरण स्वच्छ आ प्राकृतिक नहि रहि गेल अछि। पहिनेके जीवनमे अभाव आ रंगविरंगक तबाही रहैत छलै, तथापि नैतिकता आ चरित्र भड्ठल(भसिआएल नइ छलै। इएह कारण अछि जे समाज लाज(लेहाज, इज्जति(प्रतिष्ठा आ धरम(करमके जीउ(जानस' बेसी मानैत छलै। नैतिकताक बन्हन आ धर्मक आइरक चलते लौकिकता आ सामाजिकता गति(मति सन्च(मंच आ अमनियाँ रहैत छल। आइ काल्ह ठीक एकर उन्टा बयार बहैछै आ राजनीतिक घोड़ बेलगाम फौद खेलाइछै।

वातावरणीय सुरक्षाक सुनिश्चितताक अभावमे, गाम(घरमे बाहर(भितर, गाम(गमैत जायस' ल'क' घर(गृहस्थीक सबटा काज(बातमे भमता लागि गेल छै। राति( बिराइत, भोर(भिन्सरमे सुति(उठिक' लोक जाइयो नै पबैए। आम(आँठी, धान(रब्बीराइ आ खेत(खहियानक रत्तुका रखबारी(ओगरवाहीस' ल'क' दौनी(दोगानी डरे भ' नइ रहल अछि अछि। पहिने लोक भूतके इजोतस' आ चोरमे खोँखीए(खखारपर बेलाक' निश्चित भ' जाइत छल। आव हत्या(हिंसा, अपहरण(डकैतीक डरे लोक सांभे घरमे टाटी(बेलांठी लगा लैइअ। शहर बजारमे आव केकरो केओ राति बिच ठौर(ठेकान देव'के कोन बात, सुरक्षा डरे सबके घर, मकान ग्रीलस' घेराक' लोक(पिंजड़ा बनि गेल अछि। काज(धन्धाके चलते लोक दिन(रातिके एकटार कएने रहैत छल आ रातिके घटने लोक सोभे दिन घटू, मन छोटू भ' गेल अछि,।

जहियास' जहिना(जहिना राजनैतिक विकास भेलैअ', तहिना(तहिना समाज घोकचिक चोकरी(बोडरी भ' गेलैअ', आ से समय, परम्परा आ मूल्यमान्यताके हिसावे। ऐ ऐब, दोखके राजनीत आ सत्ताक खेल लौलकैअ', से कहमे ककरो हर्ज नै छै। सरकारक पहुँच लोकधरिक नइ छै। आव एखन केओ सुरक्षित आ निश्चिन्त नइ अइ। शहर(बजारक लोक ग्रीलक जहलमे दबकल देखाइ दैइए। गामो(घरमे दुरा(दलानके उठानि भ' गेलै। तहिया मरद(मानुख घरस' बाहर दुरा(दलानपर, खेत(खडिहानमे सुतैत छल आ से निर्फकिर, निसभेर। बहुते घरमे फट्क/टाटीक अरेबास' सुरक्षा पूर्ण भ' जाइत छलै। माल(जाल घरमे ढोकैने बहुत छलै। मुनहर महखर घरमे जँ केबाड़ो लागल रहैत छलै सेहो टेकम(टेके। ओहन सुरक्षा आ निश्चिन्ता लोके चाहवे करी आ ओकर दाम काम अनमोल आ अकूत अछि। एखनुक शान्ति(सुरक्षाक सबटा बात, बतपदाओन अछि आ शान्ति सुरक्षाके संयन्त्र संचालनक नामे खर्च होइत आएल बजेटीय रकम सै(देखोबलि(धन्धामे गेने बेबाइल जाइए। असल शान्ति(सुरक्षाक विकास सबिकाहा वातावरण निर्माणस' होएत, से बात बूझव महत्वपूर्ण आ अनिवार्य अछि।

## साहित्य-सन्दर्भ

### वृषेशचन्द्र लालक रचनाधर्मिता विमर्श

#### परमेश्वर कापड़ि

एसगरमे वृषेशक रचना पढ़ैत-गुणैत काल, नेपालीय मैथिली साहित्यक अलगस' नाम गुणैत कालक सबटा भ्खरल मनोविज्ञान आ भूड़-भ्मान मनोदशा-भाव, कात्यनिक रुपे मन पड़ि जाइत अछि। बीसम् शताब्दीक पूर्वार्द्ध आ ओकरे किछु दशक एम्हरोके आधुनिक मैथिली साहित्यक सम्पूर्ण कालखण्डमे भारतीय लेलकक वर्चस्व आ प्रभुत्व बहुत बढ़ल-चढ़ल रहने, एहि पानिक अप्पन लोकक पहचान आ अस्मिताके ओकरा सडक समतूलताक कोन बात ? पाँति-सतरिमे अएवाक बात सोचियो नइ पाबि रहल अवस्थामे, धीरेन्द्र सन-सन दूर दृष्टिबला युग-निर्मातालोकनि नेपालक मैथिली साहित्यके, साहित्यकारके अप्पन पहचान, अपन भूमिक रचनागत वैशिष्टक प्रभुत्वक आधारपर बनौक, से सोंच पुनित रहैका ई बात अहू दुआरे रहै जे तुलनात्मक रुपस' एहि लोकक अप्पन समाडक रचनाधर्मिता कनेक लौत, थोड़ेक भूस आ साहित्यिक पहचान बनव'के लौलमे लागल नव-सिखुआसनके खिच्चा-लौजा सेहो लगैक। आव समय घूमल आ बात पलटल छै। लेखक सबहक पालि बढ़ल आ पाँति नमरल छै। विधागत रुपस' भ्ममटगर आ संढाएल लगैत छै आ तएँ कहल जे एहि रचनात्मक प्रवृतिके, समग्र लेखनधाराके आ ईतिहासक समुन्नत कमके एखन डा. विमल, रामभरोस, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, रमेश रंजन, धर्मेन्द्र भ्मा विह्वल आ श्याम शशि सबहक संगहि वृषेशचन्द्र लाल, जे प्रतिवद्धतापूर्वक लिखि रहल अछि ओ बहुत बेछप, प्रमाणिक आ उत्कृष्ट साहित्यिक मूल्यक अछि, बहुत परिवर्तनशील अछि।

राजनीतिज्ञ छथि, तएँ राजनीतिमे ई अपन अधिकांश समय दैत छथि, से बात जायज होइतो, थोड़ेक समय कवारिक', मन आ लेखकीय निरन्तरता मैथिली साहित्यके द' रहल छथि आ ई बात मैथिली साहित्यक पक्षमे सकारात्मक रुपें जा' रहल अछि। आनक उत्तर-आधुनिकता अपनासबहक मने किछु बेकहल, भड्ठल आ बहसल सनके अवश्य लगैत अछि तएँ ओहि धार आ भावके आरि-तोड़ सीमा-छड़पू रचना दिसि तेहन प्रवृत देखाइ नइ दैत छथि। ओतहि अपना सबहक समकालीनता आ युगीन-सन्दर्भक जे धार आ भास छै ओ बेसी चोख, चिराह आ मटियामेट करबला अछि। समकालीन लेखन शुद्ध सम्हरल आ निछुन रहने, वैश्वीकरणक ताव आ उत्तर-आधुनिकताक चढ़ल कमानक अछि। एहन हवा-पानिस' सम्पोषित वृषेशक सृजनशील रचनाधर्मिता यथार्थ जीवनस', जगतस' बहुत लग आ आत्मियतास' भड़ल पूरल अछि। ई परिवर्तनके पक्षमे विष्फोटक आवाज दैत, युगान्तकारी, नव संरचनावादी, देश-समाज निर्माणक आग्रही देखाइ दैत छथि।

मैथिली साहित्यमे उल्लेख्य आ विशिष्ट नाम बहुते अछि। के-के अछि, ओहिसबमे नहि जा'वृषेशक प्रशंगमे एतेक त' अवश्य कहब जे हिनक लेखनीक रुतबा, भाव-सम्प्रेषणक मौलिकता आ सृजनात्मक संवेगिकताक दमके हिसावे, अपन नेपालीय मैथिली साहित्यक समकालीन रचनाकारक मध्यमे कोन सुप्रतिष्ठित ठाम-पीढ़ी दी, से एहि दुआरे नहि फुराइत अछि जे अपन मुखपुरुख लोकनिक एकठौहरी आ सर्वपक्षीय मूल्यांकन नीकस' नहि भ' सकल अछि। मुदा एतेक त' अवश्य अछि जे जाहि हिसाबस' ई लिखि रहल छथि, ओ हिनक अपन दृष्टि-सम्पन्नता, सृजनात्मक प्रतिवद्धता, लोक प्रतिक संवेगिकता आ परिवर्तन सहित नव निर्माण भावक अछि। हिनकामे तीव्र उत्कण्ठा, आ युगीन दर्शन छनि, विषय-वस्तुक पकड़ आ सूक्ष्म निरीक्षण सहितक जे बेछप विशिष्ट भावके शब्द-राग देबाक जे कवित्व-शक्ति आ क्षमता छनि आ जाहि प्रभुत्वस' ई कविता लिखि रहल छथि,से बहुत उजहियो रहल छनि। काव्यक मान आ मानकताके जाहि हिसावे ई बढ़ा रहल छथि ओ बहुत उच्च साहित्यमूल्यक तथा समकालीन भावधारके निश्चित रुपें पूर्ण करैत अछि।

वृषेश विशिष्ट कवि छथि, उत्कृष्ट गीतकार छथि, नीक कथाकार छथि, निवन्धकार आ सुपत बालगीतकार छथि। हिनक साहित्यिक सृजनशीलताक समग्रतास' मैथिली साहित्य बहुत किछु पाओत आ

पावियो रहल अछि। काहि काटिक', कूहि भ'क', कात लागिक', अपन बाट-घाट अपने बनएवाक हिसावे, तहिया नेपालीय मैथिली साहित्यक ननटुनमा कियारी बना लेने रहौं ! आव हमरो सबके दिन-समय पलटल अछि आ एहि बलबूते अपन लोहा मनवाव'के स्थितिमे आबि गेलछी। ईहो कहल जा सकैछ जे नेपालीय मैथिली साहित्यमे उपरा-उपरीक बहुते किछु विशिष्ट, श्रेष्ठ एहन क' आबि गेल अछि जे आनक सर्वश्रेष्ठोके पहुँचा मोड़ि सकैए। एहि बातके पक्का प्रमाणिक अनुभूति वृषेशचन्द्र लालके पढ़िक' सेहो भ' रहल अछि। जीवन-संघर्षक प्रत्येक मोड़ आ कोणसबस' ई संवेगित छथि। ई समयक गतिके सूक्ष्म निरीक्षण आ एहि संवेगस' उत्पन्न भावबोधके शब्दरुप दैत छथि। प्रमाणिक यथार्थ, एहि यथार्थक भीतरस' जन्मैत विचार-दर्शन आ राजनीतिस' गढ़ाएल मुद्दाक आवाज विष्फेटक, आक्रमक आ परिवर्तनकारी अछि। सुलभ सहजता हिनकामे एतेक बेसी छन्हि जे आशु कविक कोटिमे नीकस' समा, अमा सकैत छथि, ओतहि ई कोनहु विषय आ दृश्यपर, लगले नीक काव्यात्मक अभिव्यक्ति द' सेहो सकैत छथि। दोसरमे प्रयोगधर्मिता आ नव सृजनशीलताक विशेष आग्रही वृषेश, परम्परागत कएटा विधामे मीठ-मीठ नव-नव प्रयोगक संगहि नीक आ मौलिक रचनासब सेहो कएलन्हि अछि। छन्दपर हिनको पकड़ छनि आ हाइकू, टंका विधामे कविता लिखि ई अपन पहुँच उलेख्य बना लेने छथि।

बड़ी दूर नइ जा' क', उपरका बातके ओजन, अन्दाजके लेल, शीर्षक विहिन हिनक एकटा शिव विषयके कविता/गीतके समीक्षा कएल जा सकैछ। एक्केटा कविता सम्पूर्ण आ परिपूर्ण नहि होइत अछि, तथापि एहन महत्वपूर्ण अछि जे हिनक कवित्व आ जीवन-दर्शनक संवेगके उजागर अवश्य करैत अछि। हिनक एहि कविताके विशेषता ईहो देखाइ द' रहल अछि जे ई शिवके, एहि ठामक लोकक सामाजिक, राजनैतिक मुद्दा आ एहिस' उत्पन्न त्रासदके नाश करबाक लेल आह्वान करैत छथि। जाहि शिवत्व आ शत्रुसंहारक लेल ई जानल जाइत छथि, जाहि बातसबके लेल ई त्रिलोकीनाथ, औढ़रदानी कहवैत छथि, से काजके पुरनरावृति एहि ठाम करएवाक सोंच त' ई रखने छथि। ओहूस' महत्वूर्ण हिनक सोंच ई अछि जे तवाह पछिड़ल आ आक्रोशमे मातल जनता अपन अधिकार आ हकलेल जे आवाज उठवैत, परिवर्तनके पक्षमे जे आन्दोलन, विद्रोह करैत अछि, ओहिमे ओकर निरिह जान-माल अनेरे मरैत अछि। से नइ भ' क' हिनका मने शिव अपनेस' विछि-विछिक' गोट-गोटक' समाजक शत्रु, राजनैतिक भ्रष्टाचारी आ प्रतिगमनी प्रवृतिक लोकके मारि, नव सत्यम् शिवम् आ सुन्दरम्क शुभ शुरुआत करथि। ई एहि भावक जे नव नचारी लिखलन्हि अछि ओ नृत्य-गीतात्मक अछि आ एकर रंगमंचीय प्रस्तुतिक अपूर्व सम्भावनाक तागत, सहजरुपें विद्यमान अछि।

शिव-पुराण आ शैव-साहित्य अपने-आपमे यथेष्ट भड़ल-पूरल अछि। मैथिली लोकगीतमे, विद्यापति आ चन्दा भ्माक महेशवाणी-नचारीक सोहरा, प्रतिष्ठा प्राप्त छैक। शिवक शिवत्व आ लिलावत दैवत्वक पौराणिकता आ मनोविज्ञान अपने किसिमके अछि। वर्तमान परिप्रेक्ष्यक युगीन सन्दर्भमे, जुभारु शिवक संहारक रुपके नेपालक गणनायकक रुपमे उपस्थित करैत छथि। उपलब्धि विहिन जनदवावी आन्दोलन आ बन्द-हड़तालस' खिन्न वृषेश सर्वग्रासी, नेतघटु आ भ्रष्टसबके विरोध नइ, आव साफे शुद्धक' संहार चाहैत छथि। बन्द-विरोधक विष्फोटक आन्दोलनी परिवर्तनक कममे अनेरे प्रतिगमी, निपनियाँ शासन सत्ता नाहकमे बहुतेक जानमालक नोक्सान कए दैत छैक आ एकर चिछोड़क टीस आ दंश बहुत दिनधरि पछाड़ैत अछि ताहि दुआरे मुनले-बान्हले विछि-विछिक' ओकरे मारबाक लेल रुद्र, भूतनाथ,नटराज आ नीलकण्ठस' शिव गोहारिक' रहल छथि—

बाकि पृष्ठ ६ पर

ओ जे कएलनि

E-mail

dhuadhaja@yahoo.com

अहाँ नै कहबै त’ लोक बुझतै गमतै केना ? अखैनतो जे मुहजाब लगाक’ गुम्मी सधनो, ठौंसा वेड फुलल बैसल रहबै त’ बदिअल-बहसल विन विचारीसब उदाम बनल बलधौसी बलपेली कैरते रहत ! एकरा रोक’ टोक’ आ सैर-साबतु कर’के लेल संचारी बनू आ सोभे निशंक भ’क’ E-mail करु !

धूआधाजा मैथिली भाषाक बेजोड पत्रिका अछि। एकर जिनगी जान खुसहाल रहए से कामना। एहि पत्रिकाके माध्यमस’ अपने पत्रिका के एकटा नयाँ मोड़, एकटा नयाँ दिशास’ गति प्रदान कए रहलहुँ अछि। मैथिली भाषा-साहित्य,कला -संस्कृति आ समाजके एकरासँ बहुत उमेद छै।

चान्दनी कुमारी

जनकपुरधाम

तुलनात्मक हिसावे एहिमे राजनीतिक बात थोड़ेक आओर रहितय त’ नीक। अपनेक टिप्पणी आ दृष्टिकोण बहुत फर्क रहैए।

समाजिक परिवर्तन आ रुपान्तरणकलेल एकर आवश्यकता बहुत बेसी अछि।

- राजु महतो

जनकपुर-१६

ओन त’ एकर सब अंक विशेषांके रहैए। तैयौ आशा अछि जे एहिबेरके दशै अंक उत्कृष्ट आ विशिष्ट रहबेटा करतैय। दुर्गा र हस्य, शक्तितत्व आ मिथिलामे शक्ति उपासनक परम्परा आ विधि दर्शनक पक्षमे बहुतरास बातसब रहतै, तकर अगाउत कामना।

- संजय यादव,लखौरी-२ धनुषा

बाल साहित्य दिस आओर ध्यान देल जाए। खिस्सा पेहानी जे छपैछलै ताहिस’ हमरा सबके बहुत मनोरञ्जक, ज्ञानवद्धक आ आत्मविश्वास बढवाला सामग्रीसब भेटैत छल। बालसंसार उपेक्षाके नई,अपेक्षाके कामना करैत अछि।

- जगदीश साह, जनकपुर-७

वृषेशचन्द्र लालक—नवनचारी, बालगीत आ हाइकू, टंकामे कविता

नव नचारी

१

हा ! भूतनाथ !!  
किए भूतेके ?  
वर्तमानक किए ने नाथ बनल ?!

बितल अछि, प्रिय, ने दर्द आनन्द  
अछि निष्प्रभाव गनल चुनल ।  
हँ, जीवनक ई अछि तार जाल  
संसार जाहिमे बन्हल थुलन !!

यहँ न्यायक भेल अछि तारतार  
अन्यायी दानव दनकल अछि ।  
हे आऊ, एतए करु भष्म असुर  
वर्तमान भूतसँ सनकल अछि ।

२

हा ! नटराज !!  
हर्षे नाँचि रहल ?  
विषाद किए ने अहाँ गनल ?!

चाईसभ हर्षे हँसैत मुदा  
एहि भूपर नेनपन अछि कनैत ।  
जौ पेट करए हाहा-हाहा  
संगीत अध्यात्म अछि के जनैत ?!  
ने लागत एतए तन्त्र-मन्त्र  
चहुँओर खाधि जे खनल अछि ।  
हँ, नाचू एतए कान्तिनाथ  
जड़सूत्रीसभस’ ठनल अछि ॥  
भाँजि त्रिशूल आव अन्त करु  
सभ विभेद एतए जे जनल अछि ।  
तब नाचू नटवर आदिनाथ  
यदि जन प्रसन्न आ जमल अछि ॥

३

हा ! रुद्र !!  
किए ई रौद्र रुप ?  
अभियन्ता किएने नाथ बनल ?!  
सृष्टि भेल फेर गड़वड़ सड़वड़  
एतए भूढ़ा लुट मचौने अछि ।  
जे काटि-खोंटि गड़ रेतैत अछि  
ओ लम्बट खूब जमौने अछि ॥  
सिखए अहींसँ रौद्र रुप  
लाखोलाखकँ मारैत अछि ॥  
मनुखे मनुखके भिंगा-पोठिया  
सन मारि खाधिमे भारैत अछि ॥  
ई तोड़ब जोड़ब कहियाधरि  
ई सृष्टि प्रलयके खेल क्षति ?  
आउ, बनि एतहि अभियन्ता आव  
सरिआउ: सभके ठेल मति ॥

४

हा ! नीलकण्ठ !!  
कीए विषपान ?!

कण्ठ जरा उपकार किए  
जे श्रम करओ से पाबो फल ।  
जे छलसँ दोसरसौ छिनए  
ओ छली धसओ पातालक तल ॥  
छाड़ू भांग-धतूर ओ बम  
सन्तान एतए अछि विगाड़ि रहल ।  
श्रमसँ भगैत अछि, शंकर  
अधोर भेषमे धूमि रहल ॥  
ई विष अछि धुलल जनजनमे  
बनि आऊ एम्हर शिव, विषहर ।  
लोक सुतए पसीनासँ लथपथ  
ई धार बहाउ, एतए हर-हर ॥

कविता

१

ऐ पिजड़ामे  
थकुचल करेज  
ने जानि किए  
देखि रहल बाट  
कथीक कथीलेल ।

भोगि रहल  
जिनगीक सजाय  
हरेक क्षण ।

सिखि रहल  
अधिभौतिक सीख  
अधियात्राक

केहन अछि  
जिनगी आ दुनियाँ  
एतक न्याय  
कओ दौगैत मस्त  
केओ धिचैत साँस

घिचओ सांस  
खाली घिचएलेल  
हा! जिजीविषा ॥

३

चुप्प छी  
चुप्पीलेल  
डरसँ  
जे केओ  
सुनि ने लेअए  
हमलालेल दोसर दिन  
खोजिए  
केओ चनि ने लेअए ।

चुप्प छी  
चूप्पीलेल  
बाजिएक हएत की  
कोन बाजी  
मरा जाएत  
सुनत ओ  
जे हमरेसन अछि  
जकरा सुनक चाही  
बहीर अछि  
स्वर हमर  
हेरा जाएत ।

४

बालगीत

सुन्दर पात  
सुन्दर फूल ।  
घेरए करौना  
बकरीक हूल ।  
तोड़ि फड़ दाई  
अचार बनौलन्हि ।  
बौआ नाचि-नाचि  
चट चटकौलन्हि ।  
चट-चट बाजय  
जीआ तालु ।  
डरे भागल  
बूढ़वा भालु ॥



५

बालगीत

फर-फर सुगा, खाए मिरचाई ।  
पिंजरामे बन्न, कएने कूर कसाई ॥

रामराम बोलो कहे, मन मुदा कारी ।  
रटैत रटैत सुगाके, गड़ भेलै भारी ॥

गड़ छोड़बएलेल, लाल तिलकोर ।  
खाइअ गट-गट, मन छैक घोर ॥

कहै छै बौआ, तारके काटू ।  
फर द’ उड़ू, आकाशके पाटू

बिनु कटने ने टूटत बान्ह ।  
चाहे भुकाऊ, शीश आ कान्ह ॥

६

हँ रे सुगावा  
कने हमरो घुमा  
रे गगनमा ।  
हँ रे सुगावा  
उड़ि-उड़ि भोरक  
रे किरणमा ॥

खूब स्वच्छन्द  
उड़ान लगबितौ  
पीसौ सिनेह  
परान मिलबितौ  
हिया जुड़बितौ

हँ रे सुगावा  
कने हमरो भुमा  
रे लगनमा

२

छोड़ि पी मोर  
ई लोक घुमोलनि  
अंग-अंगमे  
ई आगि लगोलनि  
बहुत सतोलनि

हँ रे सुगावा  
कने हमरो चुमा  
रे चरणमा ।

३

लगा धिआन  
हम नामे जपितौ  
फेरो जियाकँ  
हुनकँ चढ़बितौ  
खूब तपबितौ

सुन सुगावा  
कने हमरो गुना  
गुण-ज्ञनमा ।

मिथिला गान !



— अशोक दत्त

नमन माँ मिथिला, नमन माँ मिथिला !

प्रकट भेली एहि धरापर आदिशक्ति माता सीता  
अही पूण्य भूमिपर लिखलनि अष्टावक्र महागीता  
याज्ञवल्क्य, गौतम, कपिल, कणाद, मण्डन, वाचस्पति  
डाक गोनु गार्गी मैत्रेयी भारती हमरे विद्वान विदुषी  
चरम चेतनाक भूमि हमर, भेटए एत’ सत्यक ज्ञान  
बनल ऋचास’ वेद सांख्य दर्शन आ सहिता पुराण  
कलकल बहय वागमती कोशी गंडक जिवछ, कमला  
नमन माँ मिथिला, नमन माँ मिथिला !

शिव सिंह, हरि सिंह, दिनाभद्री, सलहेसक वीर गाथा  
विद्यापतिक तानपर जत’ सहजहि भुकि जाए माथा  
सृष्टिक एहि अलौकिक भूमिपर वृद्ध महावीर अएलैन्हि  
स्वयं महादेव उगना बनि विद्यापतिक टहल बजैलैन्हि  
जत’ प्रजा लए राजा जनक अपने हर चलौलैन्हि  
राम स्वयं सीता लए चलिअ’ एहि धरापर अएलैन्हि  
गौरवशाली ईतिहास हमर अछि, समपूज्या मातृधरा  
नमन माँ मिथिला, नमन माँ मिथिला !

विविध रंग फूलक मिथिला एकवद्ध हार अछि  
इन्द्र-धनुषी ई रंग सन एत’ सांस्कृतिक श्रृंगार अछि  
फगुआ छठि ईद मोहरंम जूड़शीतल दशमी आ जितिया  
सामा-चकेवा डोमकच्छ भरनी जट-जटिन आ भिभिया  
रुप रंग आ धर्म अनेक मिथिलाके सभ मैथिल एक  
सबके मान सम्मान एत’, नइ जाति-पातिके कोनो छेक  
कही तीरभूक्ति ज्ञानपीठ चाहे विदेह या नित्यमंगला  
नमन माँ मिथिला, नमन माँ मिथिला !

□□□

गजल

करेजपर चोट लगै छै

करेजपर चोट लगै छै तऽ, लुत्ती जनमै छै  
केओ जँ घात करै छै तऽ, लुत्ती जनमै छै

फाटल चाहे जते हो, देहके वस्त्र मुदा  
चीरपर हाथ बढ़ै छै तऽ, लुत्ती जनमै छै

रहओ केहनो अपन मड़ैया, बड़ा नीक लगैछै  
बास उपटऽ लगै छै तऽ लुत्ती जनमै छै

लऽ कर्मक रंग- कुच्ची बनवैए अपन फोटो  
ओ फोटो डहै छै तऽ, लुत्ती जनमै छै

सोनित या पानी धरती,होइछै समान सभके  
भेदके रंग चढ़ै छै तऽ लुत्ती जनमै छै

बूझि छाउर सर्द चाहे,जते खेल करए  
बात जँ हकके अबै छै तऽ लुत्ती जनमै छै

आरिसा खेत जेका

आरिसँ खेत जेकाँ, भाव बटा गेल अछि  
गाममे अपने अपन, लोक हरा गेल अछि

सौंस उपरसँ मुदा, फाँक तीन खिरा सन  
देखि रुप विपटा केदेखि, मन ई डरा गेल अछि

ककरा देखाउ हम, भेल छाती चालनि सन  
बेर-बेर अपने हमर, तीर गरा गेल अछि

एक-एक डेग एतऽ फूकि चलब मजबुरी  
गोनूक बिलाड़ि जेकाँ, ठोर पका गेल अछि

घात पर घात कते, गनिकऽ सुनाउ एतऽ  
फूल छिन हाथ हमर, लुक्का धरा गेल अछि

मुक्त आकाश भेटए, छैक मन सभके एतऽ  
आगि तऽ लगवे करत, सभटा खरा गेल अछि



## वृषेशचन्द्र लाल .....

ने लागत एतए तन्त्र मन्त्र चहुँओर खाधि जे खनल अछि । हँ, नाचू एतए कान्तिनाथ, जड़सूत्रीसभस’ ठनल अछि । भाँजि त्रिशूल आव अन्त करु, सभ विभेद एतए जे जनल अछि । देश विकास आ समाजक नव-निर्माण योजनावद्ध सृजनशील उपक्रमक प्रतिफल मानल जाइछ । ई शुद्ध पुनित भावक, सृजनात्मक आवेगक होइत रहल अवस्थामे नेपालक सबटा विकास-निर्माणक वात भ्रष्टाचारी आ वैमान लोकक हाथमे जा’क’ लिलोह भ’ भ’ गेल अछि । निर्बल, निर्धन आमलोक जनैत-बुझैत अछि सब किछु मुदा शक्तिशाली दानवी भ्रष्टाचारीके किछु विगाड़ि नइ जे सकैछ त’ रुद्रावतार शिव, जे नवयुग निर्माणक अभियन्ता(ईन्जिनियर) छथि, तिनका रौद्रै रुप ध’क’ विकास-निर्माणक बाट-घाटमे कंटक काँट बनलसबके सोभे संहारके लेल आह्वान करैत छथिन्ह आ ई संवेग वृषेषक अपन नइ, सधुवा आम जनकक, शुद्ध मनक ककुलताक आवेगक कहल जा’ सकैछ—

हा ! रुद्र !!

किए ई रौद्र रुप ?

अभियन्ता किए ने नाथ बनल ?!

सृष्टिक भेल फेर गड़वड़ सड़वड़ एतए भूठा लुट मचओने अछि । जे काटि-खोँटि गड़ रेतैत अछि ओ लम्पट खूब जमौने अछि ॥ सिखल अहींसँ रौद्र रुप लाखोंलाखकें मारैत अछि ।

मशानी शिव भूतनाथ छथि, योगेश्वर छथि आ समाधिस्थ रहैत छथि। देशमे, समाजमे पसरल अन्याय-अत्याचार, भ्रष्टाचार आ अराजकताके निर्मूल करवाक हिसावे अपन दर्द-पीड़ाक उल्हन-उपरागस’ भूतनाथ महादेवके बोकियबैत ललकारा, टोकारा दैत, मशान घाटमे निफिकिर थभकल, आँखि मुनने बैसल शिवके ताण्डव रुपमे आवि, प्रलयंकर रुपधारण कए, लोक-शत्रुके नाश आ समाजमे न्याय, समानता आ शान्ति बहालीक लेल आह्वान करैत छथिन्ह—

हा ! भूतनाथ !!

किए भूतेक नाथ ?

वर्तमानक किए ने नाथ बनल ?!

○ ○ ○

यहँ न्यायक भेल अछि तारतार अन्यायी दानव दनकल अछि । हे आऊ, एतए करु भष्म असुर वर्तमान भूतसँ सनकल अछि ॥

गीता आ पुराण कहैछ जे धर्म आ समाजिकताक नाश, लोक सुख-शान्तिक हरण-भक्षण आ उवानि-कुचालिके सुधार’ आ सम्हार’ लेल—‘ यदा यदाहि धर्मस्य...’— भगवान अवतार लैत अछि । प्रतिगमनी, यथास्थितिवादी राजतन्त्रस’ उबरबाक हेतुए २०६२/०६३क आन्दोलनी परिवर्तनके खातिर कवि वृषेश, सड़क आन्दोलनमे उतरल जनसमुद्रके धार आ ओजस्वी आवाज दिअबाक हेतुए आन्दोलन कविता संग्रह लिखलन्हि । ओ आन्दोलन सफलो भेल मुदा जनआन्दोलनी भावना आ आकाँक्षानुसार रुपान्तरित नइ भ’, देशक सम्पूर्ण राजनीति आ सत्ता-वर्वताक भड्ठल खेलस’ खिन्न लोकसब समाजिक वातावरणमे पसरल विषक घरियाके पिबिक’ लोकक सबहे डर-त्रासक भय दूर करावक आकुलता व्याकुलता बेछप आ मार्मिक अछि—

छोड़ू भांग-धतूर ओ बम सन्तान एतए अछि विगाड़ि रहल । श्रमसँ भगैत अपछ, शंकर अघोर भेषमे धुमि रहल ॥ ई विष अछि घुलल जन-जनमे बनि आऊ एम्हर शिव, विषहर । लोक सुतए पसीनासँ लथपथ ई धार बहाऊ एतए हर-हर ॥

बड़ महत्वपूर्ण बा ई नइ अछि जे वृषेश त्रिदेवमे सबस’ बेसी शिवेके जनैत चिन्हैत छथिन्ह, से सत्य नइ अछि । ईहो नइ कहल जा सकैछ जे ई आव थाकल-हारल पलायनवादी लोक भ’ गेलाह अछि । सबस’ महत्वपूर्ण बात अछि लोक-यथार्थक स्वीकृतिक स्थापनाक । नेपालक युगधर्मिता आ सामाजिक परिवर्तनक सान्दर्भिकताक हिसावे आन्दोलन आ परिवर्तन अपरिहार्य अछि । एकरालेल जन-दवाव आ बन्द-विरोध सेहो जरुरी अछि । नव युग निर्माणक सम्पूर्ण पथ एहि बाटे गुजरितोमे, एहिमे नाहकमेअनमोे जान नइ जाउक, हक-अधिकार पएबाकलेल अनेरे खून नइ बहौक, पसीनाक कमाइके अन्हेरी चमरैठा लोक बेथुत नइ हुअओ, सत्ता आ खुरसीक खेलमे राजनीतिके दूरि आ बेकहल-बेपाइन नइ करौक, सत्ता अपन अधिकार आ कर्त्तव्यके बुझौक आ हत्या-हिंसा एवं अपराधी-भ्रष्टाचारी राजनीतिस’ लोकतन्त्र, प्रजातन्त्र आ गणतन्त्र खतरामे पड़ि जाइछ । सब बाधा विरोधस’ निछुन उगरास पएबाक हिसावे शिवक विभिन्न अवतारके आह्वान द्वारा सामाजिक वातावरणीय शुद्धि आ सृजनात्मक रचनाधर्मिताके प्रति आवेश जगाएब, सहृदयता आ परिवर्तनक लोक-यथार्थवादी आकाँक्षाक परिचायक अछि । बात एतए शिव-दर्शनक नइ, वृषेश-दर्शनक अछि जे रचनात्मक अछि, यथार्थवादी अछि आ लोक मुद्दाक पक्षमे, परिवर्तनकारी आवाजक संवोधनक अछि ।

## राजर्षिजनक .....

**परिच्छेद - ७**
संकाय, अनुसन्धान केन्द्र तथा अन्य निकाय

### १४. संकाय

(१). विश्वविद्यायबाट सञ्चालन गरिने उच्च शिक्षाको लागि कला, विज्ञान, चिकित्साशास्त्र कानुन व्यवस्थापन, शिक्षा लगायत तोकिएका विषयमा तोकिए बमोजिमका संकायहरु रहनेछन् ।
(२). संकायको काम, कर्तव्य र अधिकार तोकिए बमोजिम हुनेछ ।

**परिच्छेद - ८**
**सेवा आयोग**

### २१. सेवा आयोग :

(१). विश्वविद्यालयको शिक्षक तथा कर्मचारीहरुको नियुक्ति तथा वहुवाको लागि सिफारिस गर्न एक सेवा आयोग रहनेछ ।
(२). सेवा आयोगको गठन देहाय बमोजिम हुनेछ : -
(क). कुलपतिबाट नियुक्त व्यक्ति - अध्यक्ष
(ख). लोकसेवा आयोगको सदस्य- सदस्य
(ग). शिक्षकहरु मध्येबाट एकजना -

#### सदस्य

(३). उपदफा (२) को खण्ड (क) र (ग) बमोजिमका अध्यक्ष र सदस्यको नियुक्तिको लागि सिफारिस पेश गर्न कुलपतिबाट सहकुलपतिको अध्यक्षतामा सभाका दुईजना सदस्यहरु रहेको एक समिति गठन हुनेछ ।

(४).उपदफा (३) बमोजिम नियुक्त अध्यक्ष तथा सदस्यको पदावधि चार वर्षको हुनेछ ।

(५). सेवा आयोगको अन्य काम, कर्तव्य र अधिकार तोकिए बमोजिम हुनेछ ।

(६). सेवा आयोगका अध्यक्ष र सदस्यको पारिश्रमिक, सुविधा र सेवाका अन्य शर्तहरु तोकिए बमोजिम हुनेछन ।

(७). सेवा आयोगका बैठक सम्बन्धी कार्यविधि तोकिए बमोजिम हुनेछ र त्यसरी नतोकिएसम्मको लागि बैठक सम्बन्धी कार्यविधि सेवा आयोग आफैले निर्धारण गर्न सक्नेछ ।

(८). यस दफामा अन्यत्र जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि उपदफा (१) बमोजिम विश्वविद्यालयको आङ्गिक क्यामपसको रुपमा परिणत भएको क्याम्पसमा यो ऐन प्रारम्भ हुने अघि भर्ना भएका विद्यार्थीहरुले चाहेमा त्रिभुवन विश्वविद्यालयको आङ्गिक क्याम्पसको विद्यार्थीको हैसियतले परीक्षा दिन सक्नेछन ।

(९). उपदफा (१) बमाजिम विश्वविद्यालयको आङ्गिक क्याम्पसमा परिणत भएको क्याम्पसमा यो ऐन प्रारम्भ हुनु अघि भर्ना भएका विद्यार्थीको परीक्षा सम्बन्धी व्यवस्था त्रिभुवन विश्वविद्यालय र विश्वविद्यालय बीच भएको समझदारी अनुरूप हुनेछ ।

#### परिच्छेद- ९

**विश्वविद्यालयका पदाधिकारी, शिक्षक तथा कर्मचारी**

### २२, कुलपति

१ प्रधानमन्त्री विश्वविद्यालयको कुलपित हुनेछ ।

### २३ सह-कुलपति

१. शिक्षा मन्त्री वा राज्यमन्त्री विश्वविद्यालयको सह-कुलपति हुनेछ ।

#### २४ उपकुलपति

१. उपकुलपति विश्वविद्यालयमा पूरा समय काम गर्ने प्रमुख पदाधिकारी हुनेछ ।

### २५. रजिष्ट्रार

१. रजिष्ट्रारको नियुक्ति उप-कुलपतिको सिफारिशमा कूलपतिबाट हुनेछ ।

### २६. डीन

१. डीनको नियुक्ति कार्यकारी परिषदले गर्ने छ ।

### २७. निर्देशक

१.अनुसन्धान केन्द्र तथा पाठ्यक्रम विकास केन्द्रको प्रमुखको रुपमा काम गर्ने छुटा छुटै निर्देशक रहनेछन् ।

□□□

## मैथिली.....

हृदयक प्रत्येक स्पन्दनक शब्द-चेतान एहिमे एहनक’ भेटैछ जे ने ई कहियो बसियाइत-टटाइत छै आ ने उसठ-अकथाइन लगैछै । लगैछ त’ ई सब दिन ललितगर, हिलसगर आ रसगर-मीठ-मनोरंजक । लोकमंच एकरो बहुत भजएलक अछि आ एहिपर आधारित बहुतो दोकानदारी लतरल अछि, सएह नइ एकर निछुन अटूट परम्पराके, लोकक मूलभूत सांस्कृतिक पूँजीके, विदेशी शिक्षाक प्रभाव आ एहिस’ उत्पन्न भौतिकवादी, पूँजीवादी आधुनिकता एकर मुंडी त’ खोंटिते रहल, एकर पहिलुका मोटका डाढ़ि-साइहि सेहो पाड़िक’ एकरा एक लौहरिया बना देने अछि ।

मैथिली लोकचित्रकलाक विषय-परिदृश्य आ रंग-रेखास’ निर्मित्त, एकर आयाम बहुत विस्तृत अछि । परम्परागत विशदताक संगहि एकर आदर्श आ सौन्दयक उत्स, मानव सभ्यता विकासक संगहिक रहल अछि । राम-तत्व आ सीता-तत्वक आध्यात्मिकता आ दार्शनिकतामे तात्त्विक अन्तर होइतोमे, चित्रक स्तरपर रामक दहिन आ सीताक वाम हाथ-पयरक चरण-चिन्हमे विचित्रक एकत्व अछि आ इएह समेकित चित्रादर्श आ तात्त्विकता एकर लौकिक, दार्शनिक पक्षक आधार बनल अछि आ तँए ई लोक-निष्ठा तथा अनुष्ठानस’ जुड़ि, एकर सौन्दर्यक सुगन्ध गमकैत देखाइ दैछ । पहिलुका टाट आ भितपरहक ई चित्रकला होइत-हवाइत आव विवाह-दान, मांगलिक पूजा-अनुष्ठानपर आवि गेल अछि, सेहे नइ आव त’ ई होटल, महल आ पैघ-पैघ सार्वजनिक भवन, सभागार धरबाके धरवे कएलक अछि, ई कागज,कुट आ कैनवासक अलग-डाढ़ि ध’, कला-बजारमे लौठल-लदकल सांस्कृतिक माल बनि गेल अछि । भौतिकवादी लोकक वैभवपूर्ण सजावटक ई वस्तु, ‘डिमाण्ड-मिट’ कर’लेल अपन परम्परागत राग-रंगमे थोड़-बहुत अनोन परिवर्तनो करैत, खूब मालदार बजार पावि चुकल अछि । स्त्री आ कला अपन अस्मिताक आरि टपिक’आ आत्मके बेचीक’, रसिया,इश्की सबहक हाथमे पड़िक’, वर्वाद सब दिनस’ होइ आएले अछि । रोजी-रोटीक अहेरमे इहो भुतला, भसियाक अपना पक्षमे नव आदर्श गढ़ि लेनहि अछि । बजारक उपभोग्य वस्तु, नवका परम्पराक चित्रकलामे सांस्कृतिक निष्ठाक पुरनका आवेग आ संवेग खोजब फाजिल बात भ’ गेल अछि ।

मैथिली लोकगीत, लोकगाथा, लोकसाहित्य सनके अपन लोकसंस्कृतियो रहल अछि । ई जे जेहन रहल अछि, लोकजीवनस’ अभिन्न आ आत्मिक बनल रहल अछि । एक-दोसरस’ एकर पहचान बनल आ पृष्ठपोषण होइत रहल अछि । एकर सम्पूर्ण संवेगक विराटता आ लौकिकताक मौलिकता तथा एहिस’ उत्पन्न सम्पूर्ण भावनात्मक सौंदर्यमे बहुत किछु तात्त्विकता आ वैज्ञानिकता रहने, एकर अपने ढंगक शास्त्रीयता सक्रिय रहल अछि । एहि बातके, एकर विज्ञान आ मनोविज्ञानके आम आदमीके कोन बात, एकर बहुतो विख्याता धरि बूझि नहि पाबि सकल सनके बात लगैत अछि । मिथिलाक सम्पूर्ण सांस्कृतिक विरासत, बदलैत समकालीन परिवेशमे, नव व्याख्या, पुनर्व्याख्याक आवश्यकता महशूस कए रहल अवस्थामे, एकर विरासतक अणु आ अवयवस’ अपरिचित अपन नेपालोक किछु अक्षरकटु विद्वानलोकनिके विख्याता आ शास्त्रज्ञ बनल देखि उन्टे अपने लाज भ’ जाइए । सांस्कृतिक विशदता आ तात्त्विक परमार्थके विनु अवगाहने, अपन चोकरी, वोडरी प्राज्ञिकताके बले चारि/पाँच किलाशी विद्याथी जकाँ लेख लिखिक’, सांस्कृतज्ञक ढोग धएनाइ छोड़ि देवाक चाही । के केना कहि सकैए जे डा. रेवती रमण लाल, डा. रामदयाल राकेश, आ रामभरोस कापड़ि भ्रमर प्रभूतिक लिखल किताबमे, आवश्यक अध्ययन आ मेहनतिक अभावक कारणे, मैथिली संस्कृतिक तत्व, दर्शन, अध्यात्मिकता आ जीवन-संलाप ओहन भ’ क’ नहि आवि सकल अछि जे प्रमाणिक रुपस’ अएबाके चाहैत छलए । संस्कृति, सामाजिक जीवन-प्रवाहसंगे, प्रमाणिक रुपस’ स्वीकृत परम्परामे बसैत अछि,नइ कि ई कोनो पुरातात्विक महत्वक विधि-व्यवहार वा परम्परागत ऐतिहासिकतामे । लोक जीवनक प्रवाहक क्रममे, समाजक समग्रता, एहिमे अपन सम्पूर्ण राग-रंगक गाढ़ मनोविज्ञान तथा चेतना-निष्ठाक आदर्श, अनुष्ठानिक भावस’ रहइके चाही । ई परिस्थिति आ कालखण्डीय परिवेशमे परिवर्तन करैत रहितोमे, अपन मौलिकता, अस्मिता आ तत्व-दर्शनमे तेहन कोनो बदलाव स्वीकार नहि करैत अछि । इएह कारण अछि जे डा. लाल आ डा. राकेशक सांस्कृति विषयक किताबस’ बेसी महत्वपूर्ण, उपादेय आ जीवन्त मिनापक **‘गीत घर-घरक’** सीडी, क्यासेट देखाइ दैत अछि,कहने विडों-बिहाड़ि उठि सकैए ।

कहने कौट लगौक कि दक, यथार्थ ईहो छै जे सांस्कृतिक बहुतो मंच आ प्रस्तुतिमे, यथार्थता, मौलिकता आ उष्णताक गौरव नाडट-उघार भ’ हानि-बेपानि भेल देखाइ दैत अछि । कला-संस्कृतिक खेती वनिज क’ बहुतो शुरुखुरु-लोक अपन रोजीयो-रोटी चला रहल अछि । ई नीक बात नइ, से के नइ कहत ? मैथिली कला-संस्कृतिके, एकर अपने लोक-समाज परम्परागत रुपमे, आस्तिक आ नैष्ठिक संवेगक आधारपर एकर राग-रंग आ सब अंगक कण-कणके नीकस’ सहेजक’ रखने अछि । एहिपर एनजीओ, आइएनजीओ बजेटी काज अथवा मंचीय सट्टाक छमरछैयाबला काज नै बन्द त’ सम्हैरक’ हुअओ । सबके ई बात ध्यान राखहिके चाही जे एकर मूलात्मा आ मौलिकतापर कोनो तरहक आँच नइ अबैक । किताबेके नामपर जेहे-सेहे, जहिना-तहिना दोखरल-दोखाह सेहो नइ लिखाए चाही । बड़ भारी अन्हेरी बात त’ ई लगैछै जे मैथिली कला आ संस्कृतिके बहुतोगोटे अनमन लगहैर गाइ जकाँ, एकरा बिनु चरा-ओगारके, ध’-पकड़िक’, छानि-बान्हिक’, गड़ि-गों जे अनेरे दुहैत छथिन से कोन सुपत के ? गौ-गंगारूपी कला-संस्कृतिके आत्मा आ जान-प्राण बाचल रहने हमरासबके पहचान बनल रहत ।

# राजर्षिजनक विश्वविद्यालय

राजर्षिजनक विश्वविधालय जे गठन हुअ लागल अछि, ओकरा सम्बन्धमे बहुतोके बहुत बात बूझल नइ रहने, बहुतो रंगके जिज्ञासा, उत्सुकता आ अन्देशा सबके प्रष्टीकरण होएबाक हिसाबे एकर मूल विधेयकक संक्षिप्त रुप प्रस्तुत अछि— सम्पादक)

## राजर्षिजनक विश्वविद्यालयको सम्बन्धमा व्यवस्था गर्न बनेको विधेयक

**प्रस्तावना:—**  
मैथिली कला र संस्कृतिको संरक्षण, संवर्द्धन गर्दै स्थानीय आवश्यकता अनुरूप कला, विज्ञान, चिकित्साशास्त्र, कृषि, वन, पर्यटन, आयुर्वेद, कानून, व्यवस्थापन, शिक्षा, प्रचच्य दर्शन,प्रविधिक,व्यवसायिक तथा अन्य विषयमा अध्ययन, अध्यापन र अनुसन्धानद्वारा गुणात्मक र स्तरयुक्त उच्च शिक्षाको अवसर सबै क्षेत्रका जनतालाई सुलभ रुपमा उपलब्ध गराई राष्ट्रिय विकासमा दक्ष जनशक्तिको आपूर्ति गर्न र बहु विश्वविधालयको अवधारणा अनुरूप प्रतिस्पर्धाको आधारमा उच्च शिक्षाको गुणस्तरमा अभिवृद्धि गर्दै देशको शैक्षिक तथा प्राज्ञिक वातावरणलाई अभ् बढी स्वच्छ,मर्यादित र उपलब्धिमूलक बनाउन राजर्षिजनक विश्वविधालयको स्थापना र सञ्चालन गर्ने सम्बन्धमा आवश्यक व्यवस्थ गर्न अवाञ्छनीय भएकोले,  
नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३को धारा ८३ को उपधारा १ बमोजिम संविधान सभाले यो ऐन बनेको छ ।

परिच्छेद-१		ड. अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग		सदस्य
प्रारम्भिक		च. अन्य विश्वविद्यालयका उपकुलपतिहरु मध्येबाट दुइजना		सदस्य
		छ. सचिव, शिक्षा मन्त्रालय		सदस्य
		ज. सचिव, अर्थ मन्त्रालय		सदस्य
परिच्छेद- २		भ. सम्बन्धित विकास क्षेत्रको क्षेत्रीय प्रशासक		सदस्य
		त्र. डीन		सदस्य
		ट. निर्देशक		सदस्य
		ठ. क्याम्पस प्रमुखहरु मध्येबाट दुईजना		सदस्य
		ड. शिक्षकहरु मध्येबाट एकजना		सदस्य
		ढ. धनुषा जिल्लाको जिल्ला विकास समितिको सभापति		सदस्य
		ण. विश्वविद्यालय रहेको क्षेत्रको नगरपालिका प्रमुख		सदस्य
		त. विश्वविद्यालय रहेको जिल्लाको प्रमुख जिल्ला अधिकारी		सदस्य
		थ. जानकी मन्दिरको महन्थ		सदस्य
		द. शिक्षाविद् तथा समाजसेवीहरु मध्येबाट कम्तीमा एकजना महिला रहने गरि तीनजना		सदस्य
विश्वविद्यालयको स्थापना		ध. उद्योगपति, व्यापारी तथा कृषकहरु मध्येबाट ६जना		सदस्य
		न. विश्वविद्यालय स्वतन्त्र विद्यार्थी युनियनका सभापति		सदस्य
		प. सभापति, विश्वविद्यालय प्राध्यापक संघ		सदस्य
		फ. भौतिक तथा आर्थिक सहयोग दाताहरु मध्येबाट तीनजना		सदस्य
		ब. रजिष्ट्रार		सदस्य सचिव
		३. उपदफा (२) बमोजिमका पदेन सदस्यहरु बाहेक अन्य सदस्यहरुको मनोनयन कार्यकारी परिषद्को सिफारिशमा कुलपतिबाट हुनेछ ।		
		४. मनोनित सदस्यहरुको पदावधि तीन वर्षको हुनेछ ।		
		५. कुनै कारणले मनोनित सदस्यहरुको पद रिक्त हुन गएमा बाँकी अवधिकालागि उपदफा ३ बमोजिमको प्रक्रिया पूरा गरी अर्को व्यक्तिलाई मनोनयन गरिनेछ ।		
		परिच्छेद - ३		
		विश्वविद्यालयको संगठन तथा पदाधिकारी		

### विश्वविद्यालयको संगठन तथा पदाधिकारी

#### ५. विश्वविद्यालयको संगठन:—

विश्वविद्यालयको संगठन देहाय बमोजिम हुनेछ र यिनीहरुको सामूहिक रुप नै विश्वविद्यालयको स्वरुप हुनेछ:—

- क. सभा
- ख. प्राज्ञिक परिषद्
- ग. कार्यकारी परिषद्
- घ. सेवा आयोग
- ङ. संकाय
- च. अनुसन्धान केन्द्र
- छ. विद्या परिषद्
- ज. क्याम्पस
- झ. तोकिए बमोजिमका अन्य निकायहरु ।

#### ६. विश्वविद्यालयका पदाधिकारीहरु:—

- विश्वविद्यालयमा देहायका पदाधिकारीहरु रहनेछ:—
- क. कुलपति
  - ख. सह-कुलपति
  - ग. उपकुलपति
  - घ. सेवा-आयोगका अध्यक्ष
  - ङ रजिष्ट्रार
  - च. डीन
  - छ. निर्देशक
  - ज. क्याम्पस प्रमुख
  - झ. तोकिएका अन्य पदाधिकारीहरु ।

परिच्छेद- ४	
-------------	--

### सभाको गठन, काम, कर्तव्य र अधिकार

#### ७. सभाको गठन :—

- १.विश्वविद्यालयमा सर्वोच्च निकायको रुपमा एक सभा रहनेछ ।
२. सभाको गठन देहाय बमोजिम हुनेछ :—
- |  |           |
|--|-----------|
| क. कुलपति                                      | अध्यक्ष   |
| ख. सह-कुलपति                                   | उपाध्यक्ष |
| ग. उप-कुलपति                                   | सदस्य     |
| घ. सदस्य, राष्ट्रिय योजना आयोग (शिक्षा हेर्ने) | सदस्य     |

### प्राज्ञिक परिषद्को गठन तथा काम, कर्तव्य र अधिकार

#### १०. प्राज्ञिक परिषद्को गठन :—

१.विश्वविद्यालयको शैक्षिक तथा प्राज्ञिक कार्यलाई व्यवस्थित गर्ने निकायको रुपमा काम गर्न एक प्राज्ञिक परिषद् रहनेछ ।

#### २.प्राज्ञिक परिषद्को गठन देहाय बमोजिम हुनेछ:—

- |   |            |
|---|------------|
| क. उप-कुलपति  | अध्यक्ष    |
| ख रजिष्ट्रार  | सदस्य      |
| ग. डीन  | सदस्य      |
| घ. विश्वविद्यालयका विभिन्न विषय समितिका अध्यक्षहरु मध्येबाट तीन जना | सदस्य      |
| ङ. क्याम्पस प्रमुखहरु मध्येबाट एकजना                                | सदस्य      |
| च. शिक्षकहरु मध्येबाट एकजना   | सदस्य      |
| छ. डीनहरु मध्येबाट उपकुलपतिले तोकेको डीन                            | सदस्य सचिव |
३. उपदफा (२) बमोजिम पदेन सदस्य बाहेक अन्य सदस्यको मनोनयन उप-कुलपितबाट हुनेछ ।
४. उपदफा (२) बमोजिमका मनोनीत सदस्यको पदावधि तीन वर्षको हुनेछ ।
५. कुनै कारणले प्राज्ञिक परिषद्का मनोनीत सदस्यको पद रिक्त हुन गएमा बाकी अवधिका लागि उदफा (३) बमोजिमको प्रक्रिया पूरा गरी अर्को व्यक्तिलाइ मनोनयन गरिनेछ ।
६. प्राज्ञिक परिषद्को बैठक सम्बन्धी कार्यविधि तोकिए बमोजिम हुनेछ । र त्यसरी नतोकिएसम्मका लागि बैठक सम्बन्धी कार्यविधि प्राज्ञिक परिषद आफैले निर्धारण गर्न सक्नेछ ।

#### परिच्छेद - ६

#### १२. कार्यकारी परिषद्को गठन :

- (१). विश्वविद्यालयको कार्यकारी निकायको रुपमा काम गर्न एक कार्यकारी परिषद रहनेछ ।
- (२). कार्यकारी परिषद्को गठन देहाय बमोजिम हुनेछ : -
- |                              |  |
|------------------------------|--|
| (क). उप-कुलपति               |  |
| (ख). शिक्षकहरुमध्येबाट एकजना |  |
| (३). रजिष्ट्रार              |  |
- (३). उपदफा (२) बमोजिम पदेन सदस्य बाहेक अन्य सदस्यको मनोनयन उप-कुलपतिको सिफारिसमा सभाबाट हुनेछ ।
- (४). उपदफ (२) बमोजिमका मनोनीत सदस्यको पदावधि तीन वर्षको हुनेछ ।
- (५). कुनै कारणले मनोनीत सदस्यको पदा रिक्त भएमा बाँकी अवधिका लागि उपदफा (३) बमोजिमको प्रक्रिया पुरा गरी अर्को व्यक्तिलाई मनोनयन गरिनेछ ।
- (६). कार्यकारी परिषद्को बैठक सम्बन्धी कार्यविधि तोकिए बमोजिम हुनेछ र त्यसरी नतोकिएसम्मको लागि बैठक सम्बन्धी कार्यकारी परिषद आफैले निर्धारन गर्न सक्नेछ ।



विचार प्रवाह

धान कुटू धनिया ... !

## डोमा कटाँउभ



—डॉ. युगल किशोर लाभ

मधेशियो दलमे भ’ गेल एकता  
सत्तरि सांसद आ नब्बे देखू नेता  
दलफोड़वा सहितक ई छैक जत्था  
कुर्षिए लेल आपसमे जुतम-जुत्ता

एक मधेश अछि, सबहक ई मुद्दा  
लेब मंत्रालय जाहिमे पुष्टगर गुद्दा  
भेटत ने मन्त्री त’ फोड़ि देब दल  
मधेशी दलक हमहूँ मानुष छी भल

विकासक योजना होइछ, फुसि आश्वासन  
चुसि खाक’ दश-दश लाख करैत रहू शासन  
सड़क सिचाइ लेल मधेश अछि, पूर्ण बेहाल  
सिंचाइ अछि, पहाड़मे पसरल सड़क संजाल

तुलसी मेहर आक्रमक राजधानी पयान भेल  
छिन लेलक एयरपोर्ट पश्चिम प्रस्थान लेल  
तेइसगोट सांसदमे प्रायः सभ सष्टकाण अछि  
खोजबा नेतृत्वक ई प्रष्टे प्रमाण अछि,

सांसदसभ जुटल अछि, भरए अपन बखारी  
ठकाएल अछि, जनता जे मूल भिखारी  
पैघ सनक धोखा ई पहाड़ सनक चोट अछि  
चेतथु सभ जनता, कुपात्रके ने वोट दैथ

कठिन प्रयास भेल बनल ई मोर्चा  
भ्रष्ट दल-बदलू छोड़बैछ, खोंइचा  
भोजभट्ट सांसद, संसदमे करैछ पाउज  
मंत्रालय मालदारलेल करए डोमा कटाउँभ

□□□

## धर-खसौनी.....

लगभग पौने दू करोड़ अछि । सबस’ बढ़का बात ऐ ठाम ई छै, जे सरकार एकर विधेयक स्वीकृति सहित एकर गठन प्रक्रियामे जे लागि जाय, त’ एकरालेल बजेट अपनेमने आब’के शुरु भ’ जएतै । एकरालेल जमीनक व्यवस्थास’ ल’क’ आन छलफल सहमति, गोष्ठी आदि विभिन्न स्तरपर भ’ सभ प्रक्या पूरा क’ लेल गेल होइतोमे, ई नइ जे बनि रहल छै, से बात एहि ठामके जनताके नइ नीक लागि रहल छै ।

प्रा.विजय दत्त द्वारा संचालित ओहि गोष्ठीमे प्रा.परमेश्वर कापड़ि, डा.रामकुमार यादव, अमरचन्द्र अनिल, अजय भ्ना, अवधेश पोखेल, अशोक दत्त लगाएतक वक्तासब अपन-अपन बातस’ दवावी सहजोड़ दैत, विश्वविधालय स्थापनामे लागल अटपटीके खट्टी बोलवैत, एहि सेसनमे टेबुल भेल एकर विधेयकके जँ पास नइ भेल त’ सरकारक विरोधमे लोहा-लड़ाइ उखारि, सब गैचके छोड़ा देबाक चेतावनी दैत गेलथि । एकर स्थापना आ संचालनक पक्षमे जन-दवावी सडोरके वास्ते अगिला शनिदिन, हुंजहिया बैसार

## दहलियाएल

## बात नहि

## बाजू



—ई. चन्देश्वर रौनियार

एखन धरि एहि ठाम, एहि रामानन्द युवा क्लवमे जम्मा छी आ सबगोटे मिलिक’, जतेक जे अपना जनिते नीक-नीक बात बजलीए, ओहिस’ बात आरो दहलियाएल भसिआएल हमरा लगैए । बहुतोगोटेके एखैन धरि ईहो नइ बुझल अछि, जे राजर्षि जनक विश्वविधलयक ऐन छै, की, जखनि कि दर्ता भेल विधेयकक फोटो कपी एहि ठाम अछि । किछु प्राध्यापकके एहिमे अपन सेवा-सुविधाके बातमे अन्देशा छनि त’ एहिलेले ई विश्वविद्यालये नइ खुजओ, एहनो कोनो बात भेलैए । किछुगोटे जे कहैत छिए, जे ई एहन हुअओ, ओहन हुअओ, त’ एकर उत्थान आ मिटिइ एना हुअओ त’ नयाँ शुरुआय हुअओ सब बेकारके बात छै । हम ईन्जिनियर छी, आ खाली निर्माणके भाषा बुझैत छिए । हमसब कोनहुँ योजनाके शुरुएमे अँग्रेजीके **भीएमजीओ** अर्थात् परिकल्पना, संलग्नता /नारा, लक्ष्य आ उद्देश्य— ई चारिटा चीजके आवलम्बन करैत चलैछिए आ निश्चित रुपें सफलता प्राप्त करैत छिए । राजर्षि जनक विश्वविधालयके विषयमे बहुत छलफल, अन्तरक्रिया, गोष्ठीसब भ’ चुकल अछि आ आवश्यकता छै, जे सबगोटे एकर मिसनके सफलतामे एकजुत भ’ क’ लागि जाथि । हमरा नइ लगैए जे एहि विधेयकमे कोनो एहन बात छुटल छै, जे आवश्यक होइक आ जँ जे छैहो त’ ओकर संशोधन, परिमार्जन बादमे होइत रहतै । पहिने विश्वविधालय त’ बनाउ ।

## अरडा किए लागल रहतै ?



राजेन्द्र भा

विश्वविधालयके ल’क’ एखन सबस’ महत्वपूर्ण बात छै जे खुलओ । ऐमे जे जत्त’ अरडा लागल छै ओ किए लागल रहतै ? ओ ओट सबस’ पहिने हटओ जाहिस’ एकर गाड़ी आगू मुँहें बढ़तै । ऐ सबस’ महत्वपूर्ण बात ई छै, जे खोलनेटास’ बात चल’-बन’बला नइ अछि । एहिस’ पहिने बहुतो संघ संस्थासब खुजल आ बन्द पड़ल अछि वा ओकर केओ माय-बाप नइ छै, तेहने नइ हुअए । बहुतो ठाम बहुतो विश्वविधालयसब खुजलो छै, आ ओहन भ’क’ चलिए नै रहल छै, से नइ हुअए ।

ऐ देशमे बड़-बड़ कानून बनैछै, समझौतासब होइछै, बहुतो आनन्दोलन संघर्षसब होइछै आ सेरा, बिला जाइछै, से नइ हुअए । एकर जे अनेको चुनौतीसब जे छै - जेना नव-नव कार्यक्रम अनबाक, पदाधिकारीमे टैलेसी आ प्रध्यापक नव ताब-तेवरके रहए । एकर बजेट व्यवस्थाक आ आय-स्रोत बढ़एबाक संगहि, जँ कोनो व्यक्ति वा प्रवृत्तिके लोक सोंचए लागए— हमरे, हमरे जाति-पातिके, हमरे दलके लर-जरके वा हमही आ हम नै त’ केओ नइ, से नइ हुअए, तेकरो प्रावधान आ प्रभुता कुशलताके बात होएबाक चाही ।

सम्बन्धित सब पक्षके समेटिक’ बैसबाक निर्णय भेल, सएह नइ, अहूपर सरकार नइ घमल त’ ओकरा तेरहो करम करबाक रणनीति अपनएबाक नियार भेल ।

जनकपुर विश्वविधालय गठन ल’क’, तबधल-लोहछल लोक आक्रमक एहि दुआरे बुझाइ छथि जे एहि देशमे, पछाड़ियो उत्थान भेल कएटा विश्वविधालय चलियो रहल अछि, आ सब तरहक ठोकल ठाएल अहगर आधार आ पूर्वाधार सहित प्रमाणिक विषय बनाक’, आगू बढ़ल होइतोमे, सरकार एकरा अनेरे भरियाक’ टारने-बाड़ने अछि ।

ऐ बातमे असगरे सरकारीए पक्ष दोखी अइ सएह नइ, अपनो किछु टर्डीघिचा लोक आ दलसब सेहो अछि, कहिक’ आगि उठाएल जाइछ । साँच-भूठ बात जे रहओ, किछु लोकके आँखिमे ई बात अखैरक’ गड़ैछै जे ई विमलेन्द्र विश्वविधालय भ’ जायत वा एकर सबहे जश-प्रतिष्ठा निधिएके भेटि जएतनि । ओहूस’ बेसी हुनक अपने दलक भितरके किछु लोक हुनका विवि.क नामे सफल नहि हुअए नइ देब’ चाहैत छथिन । किछु लोक अहू दुआरे मन हिच्चू

## मिथिलामे पितृ-पूजन

मिथिलामे पितृ-पूजन जीवनक अभिन्न अंग अछि आ एकर विधि सेहो विशिष्ट आ सरल अछि । कमस’ कम पितृपक्षमे निश्चित रुपें पितृके तर्पण कएल जाइछ आ जाहि तिथिके प्राणान्त भेल रहैत अछि ओहि तिथिके मृतकक पार्वण श्राद्ध कएल जाइछ । पार्वण श्राद्धक पद्धति सेहो विशिष्ट रुपमे मिथिला विकसित कएने अछि जे घर-घरमे स्थापित अछि आ आश्विन मासक पितृपक्षमे देखल जा सकैछ ।



कृष्ण शंकर मिश्र

मिथिलामे देवता आ पितृके समान रुपस’ देखल जाइत अछि, समान रुपस’ पूजलो जाइत अछि । एहिलेल देखू ई मन्त्र—

- ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एव च
- नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः

एहि मन्त्रस’ स्पष्ट अछि जे मिथिलामे सभ देवता, सभटा पितृ, महायोगीसभ, स्वाहा आ स्वधा के पूजन, तर्पण जँ नित्य संभव नहि हो त’ नित्य-प्रणाम अवश्य कएल जएबाक चाही ।

मिथिलामे, ई एकटा सिद्धान्त मात्र नहि अछि । एतुका दैनिक पूजामे पूर्वकालस’ पितृ-तर्पण समाविष्ट अछि । चाहे क्यो वैष्णव हो, शैव हो, शाक्त ओ वा गाणपत्य हो, अपन-अपन दैनिक पूजन-कर्ममे पितृ-तर्पणके समावेश कएने छथि, जाहिमे पितृकूल आ मातृकूलक पितृलोकनिके तर्पण गंगाजल मिश्रित जल, सादा जल वा विशिष्ट अर्घपात्रक द्रव्यस’ कैल जाइत अछि । जँ दृढतापूर्वक पितृ-तर्पणके दैनिक पूजनमे समावेश क’ लेल गेल त’ सहजे देवता आ पितरमे समभाव स्थापित भ’ जाइत अछि, जे सद्यः अनेक सिद्धि प्रदान करैत अछि । एखनो मिथिलाक गृहस्थोमे बहुत सिद्ध पुरुष छथि । शंकराचार्यके मिथिला आगमनके समयमे हुनको अनेक सिद्ध गृहस्थक सिद्धिके सामना कर’ पड़ल छलैन्ह— ई सर्व विदित अछि । मिथिलामे दैनिक कुलदेवताक पूजन, ग्रामदेवताक पूजन, पूजनके क्रममे जखने पितृ-तर्पण सामेल भ’ जाइछ, दैनिक पूजा एकटा विशिष्ट साधना बनि जाइत छैक । एहि तरहें पितृ-तर्पण एकटा सबल साधन बनि जाइत छैक— सिद्धि प्राप्तिके । पितृ-तर्पण सएकटा सबल साधन बनि जाइछ— ईष्ट देवताके अनुग्रह प्राप्तिके ।

आब हम विशेष विस्तारमे नहि जाय चाहैत छी । तँ हमर अपन आ किछु विशिष्ट मैथिल साधक लोकनिके अनुभवके आधारपर एतबे बहय चाहैत छी जे अपन-अपन ईष्ट देवता वा ईष्ट देवीके बीज मंत्र जोड़िक’ जँ दैनिक पूजामे पितृ-तर्पण कल जाय त’ कमस’ कम शान्ति, समृद्धि, दूरदृष्टि आ बौद्धिक प्रखरता जरूर प्राप्त होइत छैक, पूजकके । तर्पण पात्र आगामे स्थापित कैला उत्तर अनामिकास’ पितृ-तर्पण करबाक चाही । मन्त्र निम्नानुसारे अछि—

- ॐ (बीज मंत्र) जीव दातारं पितर तर्पयामि नमः
- ॐ „ (अमूक) पितामहं तर्पयामि नमः
- ॐ „ „ प्रपितामहं तर्पयामि नमः
- ॐ „ „ वृद्ध प्रपितामहं तर्पयामि नमः
- ॐ „ „ गोत्रजा तर्पयामि नमः
- ॐ „ „ स्तन्यदात्रीं मातरं तर्पयामि नमः
- ॐ „ „ पितामहीं तर्पयामि नमः
- ॐ „ „ प्रपितामहीं तर्पयामि नमः
- ॐ „ „ वृद्ध प्रपितामहीं तर्पयामि नमः
- ॐ „ „ मातामहीं तर्पयामि नमः
- ॐ „ „ प्रमातामहीं तर्पयामि नमः
- ॐ „ „ वृद्ध प्रमातामहीं तर्पयामि नमः
- ॐ „ „ मम सर्व पितरः तर्पयामि नमः

एहि प्रकारें मन्त्रसँ दैनिक पितृ-तर्पण करबाक चाही । ई हमर अनुभूति अछि ।

□□

## त्रि.वि.के ....

हुनकासबके एकर सफलता आ आर्थिक भार वहन प्रति बहुत बेसी अविश्वास रहैक । बहुत दिने, अनेको तरहे विश्वास दिअओने ओसब आब मानिगेल छथि । ई विश्वविधालय हुनकासबके सेवा-सुविधाके ग्यारेंटीए नइ लेने अछि, अपितु ओसब स्वेच्छास’ त्रिवि.योके अन्तरगत जाइयो सकैत अछि, से अधिकार हुनकर सुरक्षित छन्हि । दोसरमे एकर विरोध त्रि.वि. दिसस’ रहैक । ओसब नै चाहै जे जनकपुर दिसके क्याम्पस सब ओकरा हाथस’ निकलिक’ बेहाथ भ’ जाय ।

**एकर स्थापनाक बात कत’धरि पहुँचि गेल अछि ?**

बहुत अगूआ गेल अछि ! संसदमे ऐन पारित कर’के बात छै आ सरकार तर्फस’ एकर ऐनके लेल विधेयक दर्ता भ’ चुकल अछि । **राराब जाति-पातिके राजनीतिपर सेहो चलैछै । एकर खतरास’ ई उबर तै केना ?**

एह, बनबैछी विश्वविधालय, ओहूमे तत्त्वदर्शी दार्शनिक राजर्षि जनकक नामपर ! एहनमे जाति-पातिके ओभरी-धुरची रखबै, से नइ होएत । जाति-पाति आ दलगत राजनीतिस’ बहुत उपर उठिक’, दक्षता, विशेषज्ञता आ खनकदार सोंचबला प्रतिभाके प्रभुत्व रहतै ! ज्ञान गमकए आ प्रतिभा चमकए ततबे नहि, एकर जनशक्ति उत्पादन दक्ष रहने, ओकर रोजगारीक समस्या नइ रहतै ।

□□□

अछि जे राराब एकर आधार क्याम्पस छै आ ओ क्याम्पस पढ़ाइ लिखाइके मामिलामे साफ चौपट अछि आ खाली सर्टिफिकेट बँटबाक काज करैत अछि, एहनमे ई विश्वविधालय नीकस’ चला सकतै कि नइ, से परमसिनेह लागि रहल अछि, त’ किछुके एहि विविमे काँग्रेसीया कायथ, बाभन आ गुआरके वचस्व होएबाक अन्देशा छै । एहि विश्वविधालयके गठन प्रक्रियाके सम्पूर्ण महत्वपूर्ण बातसब ल’क’ बहुत आगू बढ़ि चुकल विमलेन्द्र निधिस’, एकर सबहे राग-विरोग आ उलहन-उपरागके बात जे कहलिएन्हि, त’ ओ जोड़े ठोंठे कहलथि— बाबा, नइ हम त’, केउ त’ आगू आबिक’, काज क’क’ त’ देखाबथु ! हम हुनका स्वागतमे सबस’ पहिने हमहीं माला पहिरएबनि । हुनका नामे जानकी मन्दिरमे पूजा-प्रसाद चढ़एबनि ! ओहि लेल कूलमे केओ दादा कहा सकैत छथि । ओना ओ ईहो जनतब देलन्हि जे एकर विधेयक प्रस्तावके संसदमे हम टेबुल करवाब’मे सफल भ’ गेल छी आ एकरा आब पास होएबाक बात बाँकी छैक ।